भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था
कल्पनाओं से नवाचार तक

वर्तमान में रचनात्मक अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था को दिशा देने वाले एक **शक्तिशाली परिवर्तनकारी कारक** के रूप में उभरा है। आज के समय में रचनात्मक अर्थव्यवस्था न केवल आय सृजन के मामले में, बल्कि रोजगार पैदा करने और निर्यात से होने वाले आय के मामले में भी **वैश्विक अर्थव्यवस्था के सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रकों में से एक है।** भारत में इस अर्थव्यवस्था का आकार **30 बिलियन डॉलर** का है। अतः इस **क्षेत्रक को आगे बढ़ाने में हमारा देश एक अग्रणी भूमिका** निभा रहा है। हालांकि, बौद्धिक संपदा से संबंधित मुद्दों का सामना करने के अलावा, रचनात्मक उद्योग या अर्थव्यवस्था को प्रौद्योगिकी के कारण उत्पन्न होने वाली प्रतिस्पर्धा से भी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

इस डॉक्यूमेंट में हम निम्नलिखित पर चर्चा करेंगे:

1. रचनात्मक अर्थव्यवस्था क्या है? 2
   1.1 रचनात्मक व्यवसायों में कौन-सी विशेषताएं होती हैं? 2
   1.2 भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था की क्या स्थिति है? 3
2. भारत जैसे देशों के लिए रचनात्मक अर्थव्यवस्था का क्या महत्त्व है? 4
3. भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास में बाधा डालने वाले प्रमुख कारक कौन-से हैं? 5
4. भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास को समर्थन देने के लिए शुरू की गई विविध पहलें कौन-सी हैं? 7
5. भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था को बेहतर समर्थन प्रदान करने और उसे बढ़ावा देने के लिए क्या रणनीतियां अपनाई जा सकती हैं? 8

निष्कर्ष 8

टॉपिक: एक नज़र में 9

बॉक्स, चित्र और टेबल 10

1. रचनात्मक अर्थव्यवस्था क्या हैं?

- रचनात्मक अर्थव्यवस्था एक विकसित होती अवधारणा है तथा इसकी कोई एक निश्चित परिभाषा नहीं है।
- अंकटाड (UNCTAD) रचनात्मक अर्थव्यवस्था को **मानव रचनात्मकता, विचारों, बौद्धिक संपदा, ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बीच परस्पर अंतर्संबंधों** के रूप में परिभाषित करता है।
- मूलतः सामूहिक रूप से इसमें **ज्ञान-आधारित आर्थिक गतिविधियां समाहित हैं, जिन पर 'रचनात्मक उद्योग (Creative industries)' आधारित** हैं।
- संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार, रचनात्मक अर्थव्यवस्था उद्योग **प्रतिवर्ष 2 ट्रिलियन डॉलर** से भी अधिक का वार्षिक राजस्व उत्पन्न करते हैं। साथ ही, दुनिया भर में लगभग **50 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान** करते हैं।
- अपने इस व्यापक फ्रेमवर्क में रचनात्मक अर्थव्यवस्था की विकसित होती अवधारणा एक अत्यधिक महत्वपूर्ण घटक के रूप में उभरी है।
  - रचनात्मक अर्थव्यवस्था में **व्यक्तिगत ब्लॉगर, यू ट्यूबर्स, पॉडकास्टर और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स** जैसे कंटेंट क्रिएटर्स शामिल होते हैं। ये अपनी **रचनाओं का वितरण और राजस्व अर्जित** करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म्स तथा सोशल मीडिया का लाभ उठाते हैं।
  - गोल्डमैन साक्स के अनुसार रचनात्मक अर्थव्यवस्था का आकार **वर्तमान में 250 बिलियन डॉलर है। 2027 तक इसके दोगुना होकर 480 बिलियन डॉलर** होने का अनुमान है।

चित्र 1.1 रचनात्मक उद्योग (Creative Industries)

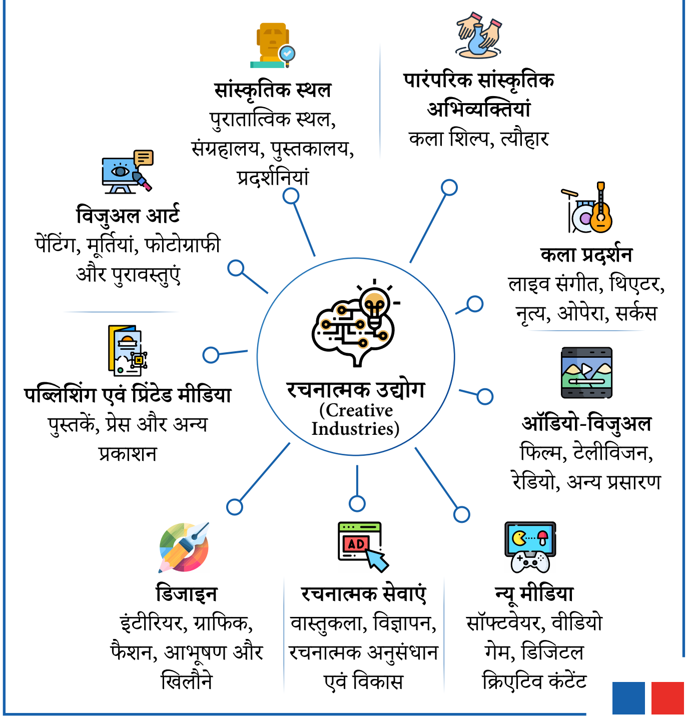

बॉक्स 1.1 रचनात्मक अर्थव्यवस्था का विकास

- "रचनात्मकता" शब्द का विकास **बीसवीं सदी के मध्य में 1920 के दशक** में हुआ था।
- 1990 के दशक में अर्थशास्त्रियों और नीति निर्माताओं ने आर्थिक गतिविधियों को रचनात्मकता के नज़रिए से देखना शुरू कर दिया था। साथ ही, **"रचनात्मक उद्योग" शब्द को लोकप्रियता** हासिल होने लगी थी।
- इससे पहले **नृत्य, संगीत, फिल्म और विजुअल आर्ट** जैसी गतिविधियों को उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण **"सांस्कृतिक उद्योग"** के रूप में देखा जाता था।
- वर्ष 1994 में ऑस्ट्रेलिया की लेबर पार्टी की सरकार द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट **"क्रिएटिव नेशन" में पहली बार "रचनात्मक उद्योगों" का विचार सामने** आया था।

1.1. रचनात्मक व्यवसायों में कौन-सी विशेषताएं होती हैं?

रचनात्मक अर्थव्यवस्था में किसी व्यक्ति द्वारा "विशिष्ट" व्यवसाय के अंतर्गत की गई सभी गतिविधियां शामिल होती हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य आय एवं संपत्ति का सृजन करना होता है। इन व्यवसायों की विशेषताओं में निम्नलिखित शामिल हैं-

- **ज्ञान-आधारित आर्थिक गतिविधियां:** रचनात्मक व्यवसाय उस ज्ञान पर आधारित होते हैं, जो या तो औपचारिक रूप से शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त किया जाता है या विरासत में मिलता है। दूसरे शब्दों में ये ज्ञान आधारित ऐसी आर्थिक गतिविधियां हैं, जिन्हें अनौपचारिक कौशल हस्तांतरण के माध्यम से पीढ़ियों से संरक्षित किया गया है।
  - **उदाहरण के लिए, राजस्थान में सांगानेर कपड़ा छपाई (Textiles printing) के लिए ब्लॉक तैयार** करने जैसे व्यवसाय।
- **मौलिक विचार एवं कल्पना:** रचनात्मक व्यवसायों में बौद्धिक संपदा का सृजन व दोहन शामिल है। इन व्यवसायों में ऐसे तरीकों से नवाचार शामिल होता है, जो आवश्यक रूप से मुख्यधारा के नहीं होते हैं, बल्कि साधारण और लचीले होते हैं।
  - उदाहरण के लिए, कम संसाधनों द्वारा अभिनव तरीके से समस्याओं को हल करने के लिए भारत का लोकप्रिय **"जुगाड़"** एप्रोच।
- **गैर-पुनरावृत्ति प्रकृति:** रचनात्मक प्रेरण पर निर्भर होने के कारण ये व्यवसाय ऐसे हैं कि इनकी पुनरावृत्ति नहीं की जा सकती है। इनकी यह गैर-पुनरावृत्ति प्रकृति इन व्यवसायों को **मशीनीकरण और स्वचालन (Automation) के खिलाफ अधिक अनुकूल** बनाती है।
  - अध्ययनों से पता चलता है कि अत्यधिक रचनात्मकता से जुड़ी हुई संयुक्त राज्य अमेरिका में 86% नौकरियां और यूनाइटेड किंगडम में 87% नौकरियों को स्वचालन द्वारा विस्थापित होने का कोई जोखिम नहीं है या अत्यधिक कम जोखिम है।
- **आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्य श्रृंखला:** एक व्यक्ति के मौलिक विचार, उत्पादन और वितरण के माध्यम से एक सांस्कृतिक उत्पाद के रूप में विकसित किए जाते हैं। यह सांस्कृतिक उत्पाद उपभोक्ता प्रतिक्रिया के आधार पर नवाचार और नए उत्पादों को बढ़ावा दे सकता है।
  - **उदाहरण के लिए,** राजस्थान के बाड़मेर में असंगठित हस्तशिल्प क्षेत्रक द्वारा किए जा रहे वस्तुओं के उत्पादन को बिचौलियों के माध्यम से बड़े उत्पादन केंद्रों को बेचा जाता है। इसके बाद उन्हें प्रोसेस करके बाजार में बेचने के लिए घरेलू खुदरा विक्रेताओं को भेजा जाता है।

बॉक्स 1.2 रचनात्मक अर्थव्यवस्था और इसकी सीमाओं को मापने के लिए अपनाए जाने वाले अप्रोच

रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मापने में उतनी ही समस्या का सामना करना पड़ता है, जितना इसे परिभाषित करने में। हालांकि, अलग-अलग पद्धतियां विकसित की गई हैं, लेकिन उनमें से कोई भी सटीक समाधान प्रदान नहीं करता है। रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मापने के लिए **निम्नलिखित तीन अप्रोच पर विचार किया जा सकता है:**

- **उद्योग-आधारित अप्रोच:** इस अप्रोच के तहत रचनात्मक अर्थव्यवस्था के योगदान का अनुमान रचनात्मक उद्योगों की पूर्व निर्धारित सूची का उपयोग करके लगाया जाता है।
  - **आलोचना:** इस अप्रोच के उपयोग से अर्थव्यवस्था के भीतर रचनात्मक रोजगार का सटीक आकलन नहीं हो पाता है। ऐसा इस कारण क्योंकि यह उन **उद्योगों के बाहर मौजूद रचनात्मक रोजगार को नजरअंदाज करता है, जिन्हें "रचनात्मक" माना जाता है।**
- **व्यवसाय-आधारित अप्रोच:** यह अप्रोच सभी क्षेत्रकों में रचनात्मक नौकरियों पर केंद्रित है। हालांकि यह, विशेष रूप से सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़े कामगारों द्वारा बनाए गए उत्पादों लिए उनकी भूमिका पर भी जोर देती है। यह अप्रोच उद्योगों में रचनात्मक भूमिकाओं को शामिल करके रचनात्मक अर्थव्यवस्था के दायरे को व्यापक बनाता है। इसके विपरीत उद्योग-आधारित अप्रोच मुख्य रूप से विशिष्ट रचनात्मक क्षेत्रकों को ही लक्षित करता है।
  - **आलोचना:** यह अप्रोच स्वरोजगार में लगे कामगारों की उपेक्षा करता है, क्योंकि अधिकांश आधिकारिक स्रोत से एकत्रित किए गए डेटा में मुख्य रूप से केवल उन फर्मों के बारे में जानकारी होती है, जो रचनात्मक कामगारों को रोजगार प्रदान करती हैं।
- **संयुक्त उद्योग:** यह अप्रोच रचनात्मक अर्थव्यवस्था का मापन करने के लिए उद्योग और व्यावसायिक वर्गीकरण दोनों के संयुक्त अप्रोच का उपयोग करता है। इसे **ट्राइडेंट विधि** के रूप में भी जाना जाता है।
  - **आलोचना:** यह अप्रोच रचनात्मक उद्योगों और व्यवसायों के बीच संबंध स्थापित करने में असमर्थ है। यह रचनात्मक उद्योगों के भीतर और बाहर रचनात्मक कार्यबल के महत्त्व पर विशेष जोर नहीं देता है। इसकी बजाए यह व्यवसायों को रचनात्मक उद्योगों के विस्तार के रूप में मानता है।

1.2. भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था की क्या स्थिति है?

भारत में रहने वाले विविध समुदाय लंबे समय से रचनात्मक अर्थव्यवस्था के अगुआ रहे हैं। वास्तुकला, नृत्य, त्यौहार, हस्तशिल्प, साहित्य और संगीत जैसे उत्पादों व सेवाओं के माध्यम से उनके सांस्कृतिक योगदान ने एक ऐसी विरासत बनाई है, जो सदियों से चली आ रही है।

टेबल 1.1 भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था में रुझान

विविध रचनात्मक व्यवसायों में लगे कामगार देश के कुल रोजगार में लगभग 8 प्रतिशत का योगदान देते हैं। ▷ रचनात्मक व्यवसायों में रोजगार के मामले में भारत की हिस्सेदारी तुर्की (1%), मेक्सिको (1.5%), दक्षिण कोरिया (1.9%) और यहां तक कि ऑस्ट्रेलिया (2.1%) से कहीं अधिक है।	रचनात्मक व्यवसाय में **तुलनात्मक रूप से बेहतरीन आय प्राप्त** होती है। यह **गैर-रचनात्मक व्यवसायों की तुलना में लगभग 88% अधिक है।**	रचनात्मक अर्थव्यवस्था **देश के समग्र सकल मूल्य वर्द्धन (GVA) में लगभग 20% का योगदान** देती है।
रोजगार के स्थानिक केंद्रीकरण के संदर्भ में **रचनात्मक कार्यबल मुख्यतः शहरों में संकेंद्रित है।** भारत में रचनात्मकता की दृष्टि से शीर्ष पांच प्रमुख केंद्र हैं- **तिरुपुर, मुंबई उपनगरीय, बेंगलुरु, नई दिल्ली और गुरुग्राम।**	औद्योगिक संकेन्द्रण के संदर्भ में, रचनात्मक कार्यबल **निम्नलिखित उद्योगों में सबसे अधिक केंद्रीकृत है:** ▷ मीडिया, एंटरटेनमेंट एवं रिक्रिएशन; कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और सॉफ्टवेयर पब्लिशिंग; आर्किटेक्चर, डिज़ाइन व इंजीनियरिंग; फैशन; शिक्षा तथा अनुसंधान एवं विकास उद्योग।	गैर-रचनात्मक कार्यबल की तुलना में रचनात्मक कार्यबल अधिक **शहर- केंद्रित, युवा कार्यबल एवं लैंगिक आधार पर कम पक्षपाती** पाया जाता है।

बॉक्स 1.3 एक छोटी सी वार्ता! रचनात्मक अर्थव्यवस्था में भारतीय सिनेमा का योगदान

विनी: क्या तुम जानते हो कि भारतीय फिल्म उद्योग की शुरुआत 1896 में हुई थी और 1913 में रिलीज हुई 'राजा हरिश्चंद्र' देश की पहली मूक फिल्म थी?

विनय: यह दिलचस्प है, विनी! यह दर्शाता है कि सिनेमा हमारी संस्कृति में कितनी गहरी जड़ें जमा चुका है, लेकिन फिल्म उद्योग भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था के लिए कितना महत्वपूर्ण है?

विनी: भारतीय फिल्म उद्योग बहुत बड़ा है। यह उद्योग हमारे सकल घरेलू उत्पाद में 1% से भी कम का योगदान देने के बावजूद, 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक का सकल राजस्व उत्पन्न करता है। साथ ही, 7.4 लाख लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

विनय: इसलिए, यह रोजगार सृजन और आर्थिक संवृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही, हमारी फिल्में वैश्विक दर्शकों पर भी प्रभाव डालती हैं, जिससे दुनिया भर में भारत की छवि और बेहतर होती है।

विनी: हां सही कह रहे हो। VFX और OTT प्लेटफॉर्म्स जैसी डिजिटल प्रगति के साथ, इसका प्रभाव और भी व्यापक हो गया है। लेकिन फंडिंग, महामारी एवं पायरेसी जैसी कुछ चुनौतियां भी मौजूद हैं।

विनय: इस क्षेत्रक की और बेहतरी के लिए सरकार कैसे मदद कर रही है?

विनी: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (NFDC), फिल्म प्रमोशन फंड एवं कर प्रोत्साहन फिल्म निर्माण में सहायता करते हैं।

विनय: ऐसा लगता है कि फिल्म उद्योग भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। साथ ही, हमारी संस्कृति की वैश्विक राजदूत भी है।

2. भारत जैसे देशों के लिए रचनात्मक अर्थव्यवस्था का क्या महत्त्व है?

रचनात्मक अर्थव्यवस्था आर्थिक और सामाजिक विकास के विविध आयामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अलावा, इसका प्रभाव सांस्कृतिक और तकनीकी क्षेत्रों तक भी फैला हुआ है।

- **आर्थिक संवृद्धि**
  - **लिंकेज और स्पिल-ओवर प्रभाव:** रचनात्मक क्षेत्रक में संवृद्धि से अन्य क्षेत्रकों, जैसे आतिथ्य और पर्यटन उद्योग से भी वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग में वृद्धि हो सकती है।
    - उदाहरण के लिए, भारत में फिल्म उद्योग (जिसे अक्सर बॉलीवुड कहा जाता है) रचनात्मक अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख हिस्सा है। यह देश की GDP तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
  - **नवाचार और आर्थिक विविधीकरण:** संबद्ध रचनात्मकता, कल्पना एवं बौद्धिक ज्ञान उत्पादों और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करने में मदद करते हैं। इससे स्थापित उद्योगों पर निर्भरता को कम करके और नए अवसर उत्पन्न कर अर्थव्यवस्था में विविधता लाने में मदद मिल सकती है।
  - **निर्यात से होने वाली आय:** रचनात्मक अर्थव्यवस्था भारत में विविध क्षेत्रकों में निर्यात संबंधी आय को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये क्षेत्रक हैं- फिल्म और मनोरंजन, सॉफ्टवेयर एवं आई.टी. सेवाएं, वस्त्र व परिधान, हस्तशिल्प, एनीमेशन एवं VFX, संगीत और मनोरंजन से जुड़े कंटेंट आदि।
- **सामाजिक विकास**
  - **सामाजिक समावेशन और सशक्तीकरण:** रचनात्मक अर्थव्यवस्था वंचित समूहों को अपने दृष्टिकोण, इतिहास और संस्कृतियां साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।
    - उदाहरण के लिए, ऑनलाइन ब्लॉग, वीडियो चैनल एवं अलग-अलग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लोगों को अपनी अभिव्यक्ति को दुनिया के सामने रखने तथा पूरे विश्व में समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से जुड़ने में सक्षम बनाते हैं।
  - **सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना:** कलाकार, फिल्म निर्माता और संगीतकार अपने रचनात्मक कार्यों, प्रेरणादायक सक्रियतावाद तथा सकारात्मक बदलाव के माध्यम से लैंगिक समानता, मानवाधिकार, पर्यावरणीय संधारणीयता एवं मानसिक स्वास्थ्य जैसे सामाजिक मुद्दों को संबोधित करते हैं।
  - **सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धन:** रचनात्मक अर्थव्यवस्था सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने में मदद करती है। साथ ही, सांस्कृतिक पर्यटन में योगदान देते हुए उसका घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार भी करती है।
    - उदाहरण के लिए, भारत के अलग-अलग हिस्सों में मौजूद हथकरघा और हस्तशिल्प उद्योग उत्पादन के पारंपरिक तरीकों को बनाए रखते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करते हैं तथा उसका प्रचार-प्रसार करते हैं।

- **कौशल विकास एवं शिक्षा:** भारत में एडुटेनमेंट (Edutainment) के उदय ने, जहां शिक्षा को डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से मनोरंजन के साथ जोड़ा है, वहीं शिक्षण की पारंपरिक विधियों को परिवर्तित भी कर दिया है। इससे छात्रों के लिए सीखना बहुत आकर्षक बन गया है। साथ ही, रचनात्मक अर्थव्यवस्था के लिए प्रासंगिक नए कौशल के विकास को भी प्रोत्साहन मिला है।

- **कूटनीति और सॉफ्ट पावर:** सांस्कृतिक आदान-प्रदान आपसी समझ को बढ़ावा देता है और राजनयिक सहभागिता नए मार्गों को खोलती है।
  - उदाहरण के लिए, भारतीय व्यंजन भारत की सॉफ्ट पावर का अभिन्न अंग बन गए हैं।
- **सतत विकास:** भारत के संधारणीय फैशन ब्रांड पर्यावरण के अनुकूल कार्य पद्धतियों पर फोकस करते हुए तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। ये ब्रांड्स विश्व भर में चल रहे पर्यावरण संधारणीयता संबंधी ट्रेंड्स का लाभ उठा रहे हैं; पर्यावरण के अनुकूल सामग्रियों की मांग में वृद्धि कर रहे हैं तथा संधारणीय उपभोग को बढ़ावा दे रहे हैं।

बॉक्स 2.1 रचनात्मक अर्थव्यवस्था पर महामारी का प्रभाव

रचनात्मक अर्थव्यवस्था पर कोविड-19 महामारी का प्रभाव बहुआयामी रहा है। इस प्रभाव ने समाज के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने में रचनात्मकता और संस्कृति की भूमिका को नए तरीके से बनाने एवं उसे मजबूत करने के लिए चुनौतियां व अवसर प्रस्तुत किए हैं।

- **प्रमुख चुनौतियां**
  - **राजस्व और नौकरी का नुकसान:** संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2019 और 2020 के बीच वैश्विक स्तर पर रचनात्मक अर्थव्यवस्था द्वारा जोड़े गए सकल मूल्य में 750 बिलियन डॉलर की कमी हुई थी। यह दुनिया भर में इस क्षेत्र में लगभग 10 मिलियन नौकरियों के नुकसान के बराबर है।
    - अलग-अलग देशों के लिए, **2020 में राजस्व घाटा 20-40%** के बीच रहा था।
  - कोविड के बाद से सांस्कृतिक सामग्री की वैश्विक मांग बढ़ी है, लेकिन **काम के अवसरों और राजस्व का वितरण असंतुलित** बना हुआ है।
  - **भारत के संबंध में:**
    - **सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम (MSMEs) और बड़ी कंपनियों को सेवाएं देने वाले फ्रीलांस वर्कर सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं।**
      - रचनात्मक क्षेत्रक में MSMEs की हिस्सेदारी 88% है।
    - लॉकडाउन के दौरान **41% रचनात्मक क्षेत्रक ने काम करना बंद** कर दिया है।
    - लॉकडाउन के दौरान **स्थापित हुए नए रचनात्मक संगठनों में से 61% बंद** हो गए थे।
- **प्रमुख अवसर**
  - **डिजिटल ट्रांज़िशन:** महामारी ने डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से लोगों के जुड़ने की गति को तेज़ कर दिया, क्योंकि उपभोक्ताओं और रचनाकारों ने समान रूप से क्रिएटिव कंटेंट के साथ जुड़ने और वितरित करने के लिए विकल्पों की तलाश की। इस डिजिटल परिवर्तन ने रचनात्मक अर्थव्यवस्था में नवाचार और सुलभता के लिए नए अवसर प्रस्तुत किए।
  - **रचनात्मकता के सामाजिक महत्त्व को प्रकट किया:** इसने मानसिक कल्याण और सामुदायिक सामंजस्य में रचनात्मकता व संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया। इससे रचनात्मक क्षेत्र को दिए गए मूल्य और समर्थन का पुनर्मूल्यांकन हुआ।

3. भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास में बाधा डालने वाले प्रमुख कारक कौन-से हैं?

- **डिजिटलीकरण से संबंधित चुनौतियां:**
  - **डिजिटल विभाजन (Digital Divide):** ज्ञातव्य है कि शहरी क्षेत्रों में डिजिटल संबंधी अवसंरचनाओं का विकास बेहतर ढंग से हुआ है। इसके विपरीत, ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में सामान्यतः विश्वसनीय या तीव्र इंटरनेट तक पहुंच का अभाव है। डिजिटल रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास के लिए इंटरनेट एक महत्वपूर्ण घटक है। इंटरनेट का अभाव रचनात्मक डिजिटल सेवाओं की संभावित पहुंच और वृद्धि को सीमित करता है।
  - **साइबर सुरक्षा (Cybersecurity):** जैसे-जैसे रचनात्मक उद्योग ऑनलाइन होते जा रहे हैं, कई रचनात्मक व्यवसायों के पास अपनी डिजिटल परिसंपत्तियों की प्रभावी ढंग से सुरक्षा करने के लिए आवश्यक ज्ञान या संसाधन नहीं हैं।
  - **डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy):** जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा डिजिटल साक्षरता से वंचित है। डिजिटल साक्षरता न केवल रचनात्मक डिजिटल कंटेंट के उपयोग के लिए, बल्कि इसके निर्माण और वितरण के लिए भी आवश्यक है।
  - **कौशल संबंधी कमियां (Skill Gaps):** भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और ब्लॉकचेन जैसी नई डिजिटल तकनीकों में प्रशिक्षित पेशेवरों की कमी का सामना करना पड़ रहा है। उल्लेखनीय है कि इनका उपयोग रचनात्मक अर्थव्यवस्था में किया जा सकता है।
  - **बौद्धिक संपदा का अपर्याप्त संरक्षण:** इसमें एक प्रभावी कॉपीराइट प्रवर्तन फ्रेमवर्क की कमी; अपर्याप्त बौद्धिक संपदा प्रशिक्षण एवं विशेषज्ञता; पंजीकरण की एक बोझिल प्रक्रिया; प्रवर्तन एजेंसियों के बीच समन्वय का अभाव और महंगी न्यायिक प्रक्रियाएं शामिल हैं।
- **प्रणालीगत मुद्दे:**
  - **समर्थनकारी नीतिगत फ्रेमवर्क का अभाव:** रचनात्मक उद्योगों के लिए कई मंत्रालय नीतियां निर्मित करते हैं, इससे कहीं-कहीं इस क्षेत्र के विकास में अवरोध उत्पन्न होता है।
    - इसके अलावा, रचनात्मक अर्थव्यवस्था की विविधतापूर्ण प्रकृति के कारण, इसकी वृद्धि एवं विकास के लिए लाभकारी नियमों और नीतियों पर अपने विचारों को आगे बढ़ाने के लिए कोई एकल उद्योग निकाय नहीं है।
  - **विश्वसनीय और व्यापक डेटा का अभाव:** इससे रचनात्मक गतिविधियों को सटीक रूप से ट्रैक करने और मापने में बाधा आती है। रचनात्मक उद्योग लोक कलाकारों, स्थानीय कारीगरों, हस्तशिल्प श्रमिकों जैसे रचनात्मक कार्यबल के एक बड़े हिस्से को रोजगार देता है। अतः एक विशाल अनौपचारिक क्षेत्र की उपस्थिति के कारण इस क्षेत्रक से संबंधित सटीक आंकड़े प्राप्त करना एक मुख्य चुनौती है।
  - **असमान वित्त-पोषण:** रचनात्मक और सांस्कृतिक उद्योग (विशेषकर अल्पसंख्यकों की कलाकृतियां) अक्सर वित्त-पोषण के लिए संघर्ष करते हैं। परिणामस्वरूप, वे नियमित रूप से नए प्रोजेक्ट बनाने या नए जोखिम लेने के अवसर से चूक जाते हैं।

- **इस क्षेत्रक में पहले से मौजूद कुछ समस्याएं:**
  - **रचनात्मक उद्योगों का विखंडन:** भारत के कई रचनात्मक क्षेत्रक (जैसे हस्तशिल्प और कपड़ा उद्योग) काफी बिखरा हुए हैं। साथ ही, इनमें कई छोटे पैमाने के उद्यम शामिल हैं, जिनमें आगे बढ़ने की क्षमता का अभाव है।
  - **बाजार तक पहुंच और वितरण:** रचनात्मक उत्पादों और सेवाओं को सामान्यतः वितरण (Distribution) का एक प्रभावी माध्यम खोजने में कठिनाई होती है। कुछ रचनात्मक क्षेत्रकों में बड़े अभिकर्ताओं का प्रभुत्व छोटी संस्थाओं के लिए प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल बना सकता है।
  - **चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव:** चयन प्रक्रिया अक्सर यादृच्छिक (Random) होती है या व्यक्तिपरक मानदंडों पर आधारित होती है। प्रतिभाशाली कलाकार (विशेषकर शहर से बाहर के कलाकार) स्पॉन्सर्ड प्लेटफॉर्म्स से लाभ प्राप्त करने में असमर्थ हैं। इससे प्रतिनिधित्व में असमानता पैदा होती है।
- **ऑनलाइन कंटेंट क्रिएटर्स द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियां:** इनमें मुख्य रूप से गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएं; लगातार कंटेंट तैयार करने के दबाव के कारण मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं; वैधता और कॉपीराइट उल्लंघन; कर दायित्व जैसे अनुपालन संबंधी मुद्दे शामिल हैं।
- **अपर्याप्त मान्यता:** भारत में स्थानीय संस्कृति और कला के बारे में (विशेष रूप से वस्त्र और हस्तशिल्प उद्योगों के संदर्भ में) जागरूकता का अभाव या गलत धारणाएं रचनात्मक क्षेत्रक के विकास में एक प्रमुख बाधा है। इस वजह से, एक सफल ब्रांड का निर्माण करना तथा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तर पर ग्राहक आधार को बढ़ाना मुश्किल होता है।

बॉक्स 3.1 रचनात्मक अर्थव्यवस्था से जुड़ी नैतिक चिंताएं

नवाचारों एवं अभिव्यक्ति से भरपूर रचनात्मक अर्थव्यवस्था कई प्रकार की नैतिक चिंताओं से भी जूझती है। यहां कुछ प्रमुख क्षेत्र वर्णित हैं जहां नैतिक प्रश्न उठते रहते हैं:

- **बौद्धिक संपदा और श्रम (Intellectual Property and Labor)**
  - **शोषण एवं अनुचित अनुबंध:** रचनात्मक मंच पर कुछ संगठनों या व्यक्तियों के एकाधिकार के परिणामस्वरूप फ्रीलांसरों और स्वतंत्र रचनाकारों को अक्सर अनुचित समझौतों, कम पारिश्रमिक व सामाजिक सुरक्षा या लाभों की कमी का सामना करना पड़ता है।
  - **एट्रिब्यूशन और नैतिक सोर्सिंग:** मौलिक कार्यों या मूल कार्य वाले क्षेत्र को उचित श्रेय या सम्मान दिए बिना मौजूदा कार्यों या सांस्कृतिक तत्वों का उपयोग करना।
- **प्रौद्योगिकी और स्वचालन (Technology and Automation)**
  - **AI-जनरेटेड कंटेंट:** एक तरफ जहां AI रचनात्मकता में सहायता करती है वहीं दूसरी तरफ इससे मानव रचनाकारों को प्रतिस्थापित करने, बिल्कुल एक जैसा क्रिएटिव आउटपुट तैयार करने एवं वास्तविक अभिव्यक्ति की कमी संबंधी चिंताएं भी उत्पन्न हुई हैं।
    - » AI टूल का उपयोग करके बनाए गए आभासी या AI इन्फ्लुएंसर्स में भी वृद्धि हुई है। इससे पारदर्शिता संबंधी मुद्दे उत्पन्न हुए हैं, क्योंकि उनके और वास्तविक लोगों के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है।
  - **डेटा गोपनीयता एवं निगरानी:** क्रिएटिव प्लेटफॉर्म बड़ी मात्रा में उपयोगकर्ता के डेटा को एकत्र करते हैं। इससे डेटा के दुरुपयोग और गोपनीयता के हनन की संभावनाएं काफी बढ़ जाती हैं।
  - **एल्गोरिदम संबंधी पूर्वाग्रह और भेदभाव:** प्लेटफॉर्म्स में एल्गोरिदम के आधार पर निर्णय लेने से कुछ प्रकार की सामग्री और रचनाकारों का गलत तरीके से पक्ष लिया जा सकता है, पूर्वाग्रह को कायम रखा जा सकता है और विविध अभिव्यक्तियों को हाशिए पर रखा जा सकता है।
- **सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव:**
  - **पहुंच का मुद्दा:** डिजिटल विभाजन, क्रिएटिव प्लेटफ़ॉर्म तक पहुंच में समानता लाने में एक बड़ी चुनौती है। इससे एक बड़ी आबादी को रचनात्मक अर्थव्यवस्था के लाभ से वंचित रखा जा रहा है।
  - **संस्कृति का वस्तुकरण एवं विनियोजन:** सांस्कृतिक प्रथाओं के संदर्भों और समुदायों का सम्मान किए बिना लाभ के लिए सांस्कृतिक प्रथाओं के व्यवसायीकरण या दोहन को लेकर चिंताएं विद्यमान हैं।
  - **पर्यावरणीय प्रभाव:** फैशन इंडस्ट्री के ऑफकट्स से लेकर तकनीकी उद्योग के इलेक्ट्रॉनिक कचरे तक, कई रचनात्मक उत्पादों के परिणामस्वरूप पर्यावरण के प्रतिकूल अपशिष्ट उत्पन्न होता है।

4. भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास को समर्थन देने के लिए शुरू की गई विविध पहलें कौन-सी हैं?

भारत ने इस क्षेत्र की क्षमता को पहचानते हुए, अपनी रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास को समर्थन दने और प्रोत्साहित करने के लिए कई पहलें शुरू की हैं। ये पहलें सरकारी नीतियों, डिजिटल अवसंरचनाओं के विकास, शैक्षिक कार्यक्रमों आदि तक विस्तृत हैं। **कुछ प्रमुख पहलों में निम्नलिखित शामिल हैं:**

- **राष्ट्रीय क्रिएटर्स पुरस्कार:** डिजिटल नवप्रवर्तकों और कंटेंट क्रिएटर्स के अलग-अलग क्षेत्रों में उनके प्रभावशाली योगदान के लिए उन्हें सम्मानित करना।
- भारत में बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPRs) के प्रशासन एवं कार्यान्वयन से संबंधित मुद्दों से निपटने के लिए **राष्ट्रीय IPR नीति, 2016** लागू की गई है।
- **क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र:** संस्कृति मंत्रालय ने लोक कला और संस्कृति के विविध रूपों को बढ़ावा देने तथा उनकी सुरक्षा और संरक्षण के लिए देश में **सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र** (Zonal Cultural Centers: ZCCs) स्थापित किए हैं।
  - इन केंद्रों ने कई योजनाएं लागू की हैं, जैसे- **युवा प्रतिभाशाली कलाकारों को पुरस्कृत करना, गुरु शिष्य परंपरा, थिएटर कायाकल्प, अनुसंधान और प्रलेखन, शिल्पग्राम, ऑक्टेव** (OCTAVE) **और राष्ट्रीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम आदि।**
- **राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम** (NHDP) **और व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना** (CHCDS): केंद्र सरकार के वस्त्र मंत्रालय ने हस्तशिल्प के समग्र तरीके से विकास, प्रचार और संरक्षण एवं कारीगरों को स्थायी आजीविका के अवसर प्रदान करने के लिए NHDP तथा CHCDS कार्यक्रम शुरू किए हैं।
- **ग्लोबल इंगेजमेंट स्कीम:** यह योजना भारतीय संस्कृति को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देती है। इसके लिए यह
  - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर **"भारत के त्यौहारों"** के आयोजन के माध्यम से भारतीय कलाओं का समर्थन करती है तथा
  - भारत के बाहर भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने वाले सांस्कृतिक समाजों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- **यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क:** सात सांस्कृतिक क्षेत्रकों में सहयोग को बढ़ावा देना तथा अनुभवों और ज्ञान के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाना। इन सात सांस्कृतिक क्षेत्रकों में शामिल हैं- डिज़ाइन, फ़िल्म, शिल्प व लोक कला, पाक-कला, मीडिया कला, साहित्य और संगीत।
  - इस कार्यक्रम के तहत, **मुंबई को क्रिएटिव सिटी ऑफ फिल्म्स और हैदराबाद को क्रिएटिव सिटी ऑफ गैस्ट्रोनॉमी (पाक-कला)** के रूप में नामित किया गया है।
- **स्पिक मैके/ SPIC MACAY (युवाओं के बीच भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति के प्रचार के लिए सोसाइटी):** यह एक स्वयंसेवी संगठन है, जो पूरे देश में स्कूलों, कॉलेजों और संस्थानों में शास्त्रीय संगीत व नृत्य, लोक कला, शिल्प, योग, ध्यान और सिनेमा के कार्यक्रम आयोजित करता है। इसका उद्देश्य औपचारिक शिक्षा की गुणवत्ता को समृद्ध करना तथा भारत की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत के बारे में लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाना है।
- **स्टार्ट-अप इंडिया योजना:** भारत में स्टार्ट-अप संस्कृति का विकास करना तथा नवाचार एवं उद्यमिता के लिए एक मजबूत और समावेशी पारितंत्र का निर्माण करना।
  - इसके अंतर्गत सांस्कृतिक और रचनात्मक उद्योगों के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से कार्यशालाएं, शिविर, प्रदर्शनियां, सम्मेलन एवं सेमिनार जैसी गतिविधियां आयोजित की जाती हैं।
- **सोशल मीडिया पर पारदर्शिता के लिए दिशा-निर्देश:** सरकार ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 के अनुसार प्रचार संबंधी कंटेंट का प्रकटीकरण करने के लिए वर्चुअल इन्फ्लुएंसर्स सहित सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के लिए इसे अनिवार्य बना दिया है।

बॉक्स 4.1 रचनात्मक उद्योग में उभरती हुई प्रौद्योगिकियां

शोध से पता चलता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑगमेंटेड रियलिटी, वर्चुअल रियलिटी और ब्लॉकचेन रचनात्मक कार्यों को नया आकार दे रहे हैं।

- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग:**
  - **रचनात्मक कंटेंट के लिए मूल्य श्रृंखला में परिवर्तन:** AI, कंटेंट क्रिएटर को दर्शकों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से जोड़ने में मदद कर रहा है।
    - उदाहरण के लिए, 2016 में 'बेंजामिन' नामक AI बॉट ने न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करके 'सनस्प्रिंग' नामक एक लघु फिल्म की पूरी स्क्रिप्ट लिखी थी।
- **एक्सटेंडेड रियलिटी (XR):** एक्सटेंडेड रियलिटी (XR) एक ऐसा पद है, जो ऑगमेंटेड रियलिटी (AR), वर्चुअल रियलिटी (VR) और मिक्स्ड रियलिटी (MR) जैसी सभी इमर्सिव प्रौद्योगिकियों को शामिल करता है।
  - **रचनात्मक अनुभवों को पूरी तरह से रूपांतरित करना:** XR में नवीन एवं सार्थक भावनाओं, कौशल और समझ को बढ़ावा देकर वास्तव में परिवर्तनकारी अनुभव प्रदान करने की क्षमता है।
    - उदाहरण के लिए, माइक्रोसॉफ्ट फ्लाइट सिम्युलेटर वर्चुअल रियलिटी मोड प्रदान करता है। यह उपयोगकर्ताओं को आभासी उड़ान अनुभव दे सकता है।
- **ब्लॉकचेन: ब्लॉकचेन रचनात्मक उद्योगों के लिए विविध तरीकों से सहायक है-**
  - **अधिक समावेशी एवं बेहतर वितरण:** जब संगीत और डिजिटल अधिकारों की बात आती है तो स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट को शामिल किया जा सकता है तथा यह पुराने फ्रेमवर्क पर आधारित कॉन्ट्रैक्ट्स (Traditional Contracts) की जगह ले सकता है।
  - **बेहतर एवं दक्ष मूल्य निर्धारण प्रणाली:** ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी गीतकार (lyricist), म्यूजिक कंपोजर, सिंगर व अन्य हितधारकों को राजस्व का सही हिस्सा प्रदान कर सकती है।

5. भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था को बेहतर समर्थन प्रदान करने और उसे बढ़ावा देने के लिए क्या रणनीतियां अपनाई जा सकती हैं?

- **भारत में रचनात्मक उद्योगों को परिभाषित करना और उनका मानचित्रण करना:** भारत को अर्थव्यवस्था, समाज और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में रचनात्मक उद्योगों के योगदान को मापने के लिए देश में इनके प्रसार को परिभाषित करना चाहिए।
- **वित्त:** रचनात्मक क्षेत्रक में उद्यमियों और MSMEs के वित्त-पोषण में क्रेडिट गारंटी योजनाएं तथा क्राउडफंडिंग उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।
  - भारत अलग-अलग बहुपक्षीय मंचों के साथ अपने संबंधों का उपयोग करते हुए **रचनात्मक क्षेत्रक के वित्त-पोषण के लिए एक संयुक्त कार्यक्रम भी स्थापित** कर सकता है।
- **कॉपीराइट के मुद्दे का समाधान करना:** क्रिएटर्स एवं इनोवेटर्स के हितों की रक्षा करने और उनकी क्रिएटिविटी को प्रोत्साहित करने के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण व प्रवर्तन से जुड़े मुद्दों का समाधान करना आवश्यक है।
  - भारत ऑनलाइन कॉपीराइट उल्लंघन और पायरेसी को रोकने के लिए **'स्वॉर्ड नेट एक्शन' के तहत चीनी मॉडल से बहुत कुछ सीख** सकता है।
- **विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति की बढ़ती पहचान:** अलग-अलग सांस्कृतिक कार्यक्रमों, व्यापार मेलों और अंतर्राष्ट्रीय उत्सवों के आयोजन के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं रचनात्मक वस्तुओं एवं सेवाओं को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाना चाहिए।
  - संस्कृति मंत्रालय की **ग्लोबल एंगेजमेंट स्कीम** नामक योजना उपर्युक्त कदम के लिए सही पहल है।
- **रचनात्मक जिलों/ केंद्रों की स्थापना:** केंद्र व राज्य सरकारें **थाईलैंड के क्रिएटिव डिस्ट्रिक्ट मॉडल की तर्ज पर देश में कुछ ऐसे जिलों की पहचान** कर सकती है, जिन्हें **रचनात्मक जिलों** की श्रेणी में रखा जा सकता है।
  - इसके अलावा, **हृदय (HRIDAY) योजना** जैसी पहलों का उपयोग रचनात्मक शहरों के नेटवर्क की स्थापना के लिए किया जा सकता है, ताकि उनकी वैश्विक पहुंच में सुधार हो सके। **हृदय (HRIDAY):** विरासत शहर विकास एवं संवर्धन योजना (Heritage City Development & Augmentation Yojana)।
- **रचनात्मक उद्योगों के लिए एक विशेषज्ञ संस्थान (Specialized Institution) का गठन:** यूनाइटेड किंगडम (क्रिएटिव इंडस्ट्रीज काउंसिल), थाईलैंड (क्रिएटिव इकोनॉमी एजेंसी), इंडोनेशिया (एजेंसी फॉर द क्रिएटिव इकोनॉमी -BEKRAF), आदि की तर्ज पर देश में भी एक ऐसी नोडल एजेंसी स्थापित की जा सकती है, जो विशेष रूप से भारत में रचनात्मक उद्योगों की वृद्धि और विकास के प्रति समर्पित हो।
- **युवाओं के कौशल एवं तकनीकी दक्षता पर फोकस:** भारत के युवाओं को तेजी से हो रहे तकनीकी बदलावों के लिए तैयार करने हेतु शिक्षा एवं कौशल विकास संबंधी माहौल में सुधार किया जाना चाहिए। इसमें युवा कामगारों और रचनात्मक उद्यमियों में डिजिटल मार्केटिंग और ग्राफिक डिजाइन जैसे डिजिटल कौशल विकसित करना शामिल है।
  - साथ ही, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ब्लॉकचेन जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने के लिए क्रिएटर्स के लिए वर्क शॉप एवं कोर्स की भी व्यवस्था की जानी चाहिए।
- **रचनात्मक उद्योगों हेतु नीति-निर्माण के लिए एक एकीकृत संस्थान के गठन की आवश्यकता:** एक मध्यवर्ती संगठन की स्थापना करना, जो नीति निर्माताओं को रचनात्मक अर्थव्यवस्था की वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक नीतिगत समर्थन पर बेहतर जानकारी दे सके।

बॉक्स 5.1 रचनात्मक उद्योगों के संदर्भ विश्व की सर्वोत्तम कार्य प्रणालियां

- **यूरोप:** यूरोपीय आयोग द्वारा एक ऑनलाइन पोर्टल "Crowdfunding4Culture" का विकास किया गया है। यह पोर्टल सांस्कृतिक और रचनात्मक उद्योगों हेतु क्राउडफंडिंग बाजार के लिए डेटा एकत्र करता है। साथ ही, रचनात्मक पेशेवरों एवं क्राउडफंडिंग कम्युनिटी के बीच संपर्क को आसान बनाता है।
  - **यूनाइटेड किंगडम:** यूनाइटेड किंगडम ने 1997 में **संस्कृति, मीडिया और खेल विभाग** (Culture, Media, and Sport: DCMS) की स्थापना की थी। इसके बाद, **क्रिएटिव इंडस्ट्रीज टास्क फोर्स** का भी गठन किया गया था। इस टास्क फोर्स ने **1998 में क्रिएटिव इंडस्ट्रीज मैपिंग डॉक्यूमेंट जारी किया था और 2001 में एक फॉलो-अप रिपोर्ट** जारी की थी।
    - 1998 के दस्तावेज़ में रचनात्मक उद्योगों को परिभाषित करने और मापने का प्रयास किया गया था।
- **दक्षिण कोरिया:** 2013 में दक्षिण कोरिया ने रचनात्मक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान व प्रौद्योगिकी और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में कोरिया की क्षमताओं का उपयोग करने हेतु **'क्रिएटिव इकोनॉमी एक्शन प्लान एंड मेजर्स'** नामक एक योजना जारी की थी।
- **ऑस्ट्रेलिया:** ऑस्ट्रेलिया रचनात्मक उद्योगों के लिए **औपचारिक नीति** तैयार करने वाला दुनिया के पहले देशों में से एक था। 2021 में, ऑस्ट्रेलिया ने भी **वीडियो गेम विकास के लिए अपना पहला फेडरल टैक्स इंसेंटिव** पेश किया था।

निष्कर्ष

एक रचनात्मक अर्थव्यवस्था के निर्माण में भारत की यात्रा इसकी समृद्ध संस्कृति और नई तकनीक के मिश्रण को उजागर करती है। जैसे-जैसे भारत डिजिटल बदलावों को बनाए रखेगा और रचनात्मक व्यवसायों का समर्थन करता रहेगा, यह आर्थिक संवृद्धि और नौकरियों के लिए नए अवसर खोलता रहेगा। साथ ही, वैश्विक विविधता और समृद्धि में योगदान करते हुए अपनी संस्कृति को समृद्ध करता रहेगा।

क्रिएटिव इकोनॉमी अर्थव्यवस्था का वह हिस्सा है, जो हमारी कहानियां बयां करती है। साथ ही, इससे यह भी पता चलता है कि एक समाज के रूप में हम जो रचनात्मक कार्य पीछे छोड़ते हैं, उनसे आने वाली पीढ़ियां हमें कैसे समझेंगी।

टॉपिक: एक नज़र में

भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था: कल्पनाओं से नवाचार तक

- (UNCTAD) रचनात्मक अर्थव्यवस्था को **मानव रचनात्मकता, विचारों, बौद्धिक संपदा, ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बीच परस्पर अंतर्संबंधों** के रूप में परिभाषित करता है। मूलतः सामूहिक रूप से इसमें **ज्ञान-आधारित आर्थिक गतिविधियां समाहित हैं, जिन पर 'रचनात्मक उद्योग (Creative industries)'** आधारित हैं।
- **रचनात्मक अर्थव्यवस्था में लगे कामगार देश के कुल रोजगार में लगभग 8 प्रतिशत का योगदान देते हैं।** रचनात्मक अर्थव्यवस्था **देश के समग्र सकल मूल्य वर्द्धन (GVA) में लगभग 20% का योगदान** देती है।

भारत जैसे देशों के लिए रचनात्मक अर्थव्यवस्था का महत्त्व

- **आर्थिक संवृद्धि:** लिंकेज और स्पिल-ओवर प्रभाव उत्पन्न करना, नवाचार, आर्थिक विविधीकरण और निर्यात से होने वाली आय को बढ़ावा देना।
- **सामाजिक विकास को बढ़ावा:** सामाजिक समावेशन और सशक्तीकरण, सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना, सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धन, कौशल विकास एवं शिक्षा सुनिश्चित करना।
- **कूटनीति और सॉफ्ट पावर:** इससे राजनयिक सहभागिता के नए मार्ग खुलते हैं।
- **सतत विकास:** इससे पर्यावरण के अनुकूल सामग्रियों की मांग में वृद्धि हो रही है तथा संधारणीय उपभोग को बढ़ावा मिल रहा है।

भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास को समर्थन देने के लिए शुरू की गई विविध पहलें

- **राष्ट्रीय क्रिएटर्स पुरस्कार।**
- **क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र:** संस्कृति मंत्रालय ने **क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र** (Zonal Cultural Centers: ZCCs) स्थापित किए हैं।
- भारत में बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPRs) पर केंद्रित **राष्ट्रीय नीति (2016)** लागू की गई है।
- **राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम** (NHDP) **और व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना** (CHCDS) शुरू किए गए हैं।
- **ग्लोबल इंगेजमेंट स्कीम:** जैसे- **"भारत के त्यौहार"।**
- **यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क।**
- **अन्य उपाय:** स्पिक मैके/ SPIC MACAY (युवाओं के बीच भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति के प्रचार के लिए सोसाइटी), स्टार्ट-अप इंडिया योजना: और सोशल मीडिया पर पारदर्शिता के लिए दिशा-निर्देश।

भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास में बाधा डालने वाले प्रमुख कारक

- **डिजिटलीकरण से संबंधित चुनौतियां:** साइबर सुरक्षा (Cybersecurity), डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy), कौशल संबंधी कमियां (Skill Gaps), बौद्धिक संपदा का अपर्याप्त संरक्षण।
- **प्रणालीगत मुद्दे:** समर्थनकारी नीतिगत फ्रेमवर्क का अभाव, विश्वसनीय और व्यापक डेटा का अभाव, क्षेत्रक के लिए असमान वित्त-पोषण आदि।
- **इस क्षेत्रक में पहले से मौजूद कुछ समस्याएं:** रचनात्मक उद्योगों का विखंडन, बाजार तक पहुंच और वितरण, चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव, गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएं।
- **रचनात्मक गतिविधियों को अपर्याप्त मान्यता।**

भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था को बेहतर समर्थन प्रदान करने और उसे बढ़ावा देने के लिए रणनीतियां

- **भारत में रचनात्मक उद्योगों को परिभाषित करना और उनका मानचित्रण करना।**
- **वित्त पोषण से संबंधित समस्याओं के लिए** क्रेडिट गारंटी योजनाएं तथा क्राउडफंडिंग उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।
- **कॉपीराइट के मुद्दे का समाधान करना।**
- **रचनात्मक उद्योगों हेतु नीति-निर्माण के लिए एक एकीकृत संस्थान के गठन की आवश्यकता है।**
- **अन्य:** विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति की बढ़ती पहचान, रचनात्मक जिलों/ केंद्रों की स्थापना, युवाओं के बीच मानव पूंजी विकास, रचनात्मक उद्योगों के लिए एक विशेषज्ञ संस्थान (Specialized Institution) का गठन।

बॉक्स, चित्र और टेबल

बॉक्स 1.1. रचनात्मक अर्थव्यवस्था का विकास 2

बॉक्स 1.2. रचनात्मक अर्थव्यवस्था और इसकी सीमाओं को मापने के लिए अपनाए जाने वाले अप्रोच 3

बॉक्स 1.3. एक छोटी सी वार्ता! रचनात्मक अर्थव्यवस्था में भारतीय सिनेमा का योगदान 4

बॉक्स 2.1. रचनात्मक अर्थव्यवस्था पर महामारी का प्रभाव 5

बॉक्स 3.1. रचनात्मक अर्थव्यवस्था से जुड़ी नैतिक चिंताएं 6

बॉक्स 4.1. रचनात्मक उद्योग में उभरती हुई प्रौद्योगिकियां 7

बॉक्स 5.1. रचनात्मक उद्योगों के संदर्भ विश्व की सर्वोत्तम कार्य प्रणालियां 8

चित्र 1.1. रचनात्मक उद्योग (Creative Industries) 2

टेबल 1.1. भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था में रुझान 3

39 in Top 50 Selection in CSE 2022

1 AIR ISHITA KISHORE
2 AIR GARIMA LOHIA
3 AIR UMA HARATHI N

हिंदी माध्यम में 40+ चयन CSE 2022 में

हिंदी माध्यम टॉपर

66 AIR KRITIKA MISHRA
85 AIR BHARAT JAI PRAKASH MEENA
105 AIR DIVYA
120 AIR GAGAN SINGH MEENA
173 AIR ANKIT KUMAR JAIN

8 in Top 10 Selection in CSE 2021

2 AIR ANKITA AGARWAL
3 AIR GAMINI SINGLA
4 AIR AISHWARYA VERMA
5 AIR UTKARSH DWIVEDI
6 AIR YAKSH CHAUDHARY
7 AIR SAMYAK S JAIN
8 AIR ISHITA RATHI
9 AIR PREETAM KUMAR

दिल्ली

HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate-6, Karol Bagh Metro Station, Delhi

MUKHERJEE NAGAR CENTRE
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar, Delhi

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

1 AIR SHUBHAM KUMAR
CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

अहमदाबाद बेंगलूरु भोपाल चंडीगढ़ गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची